अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ को स्थापना दिवस, ९ जून को कार्यक्रम

विषय : पोवार समाज, संस्कृति अना साहित्य

डॉ. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल', गोंदिया

अ) भाषण की शुरुआत

नमो वागदेवी माता, नमो शारदा मा |

ज्ञानदीप पेटाय दे, मोरो हिरदामा ||धृ||

पुरो जग मा विख्यात, राजा भोज मोरो |

ग्रंथ चौऱ्यासी रचीस, किरपालं तोरो ||

माय मोरो समाजला, ठेव किरपामा |

ज्ञानदीप पेटाय दे, मोरो हिरदामा || नमो..

बोलो...

वाग्देवी माता की - जय

गढ़कालिका माता की - जय!

पोवार समाज का आराध्य प्रभु श्रीराम की - जय

पोवार समाज का आदर्श राजा भोज की - जय!!!

येनं आभासी मंच पर विराजमान आदरणीय मुख्य अतिथि महोदय, अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार महासंघ का कर्मठ, यशस्वी पदाधिकारी गण, समाज का प्रबुद्ध बुद्धिजीवी, मातृशक्ति अना दूर-दूर लका येनं आभासी मंच पर जुड़्या मोरा आदरणीय पोवार स्वजातीय बहिन अना भाऊगिन!

सबला जय सियाराम!

अज ९ जून २०२६ को येव दिवस इतिहास मा एक स्वर्णिम अध्याय सरिखो से। अज आमी सब यहाँ आपलो स्वाभिमान, आपली एकता को प्रतीक 'अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार महासंघ' को साव्वो स्थापना दिवस साजरो करन साती येनं आभासी मंचसिन जुड़्या सेजन । येनं पावन अवसर पर सबला महासंघ को स्थापना दिवस की कोटि-कोटि बधाई!

ब) भूमिका: संस्कृति अना साहित्य को संबंध

समाज जन हो, अज मोला जेनं विषय पर बोलन को अवसर मिली से, वू आमरो अस्तित्व सिन जुड़ी से, "समाज संस्कृति अना साहित्य"।

१. संस्कृति समाज को प्राण अना साहित्य वोनं समाज को आरसा

कोनीनं खरीच कही सेस का संस्कृति समाज को प्राण रव्हं से, वोकी आत्मा रव्हं से; अना साहित्य वोनं समाज को आरसा। जेव समाज आपलो संस्कृति ला भूल जासे, वोको अस्तित्व इतिहास को पानाइनमा लका गायब होय जासे। अना जेव समाज आपलो साहित्य सुरक्षित नही ठेवं, वोकी आवने वाली पीढ़ि आपलो समाज को जड़इन लका तुट जासेती। आमरो पोवार समाज सौभाग्यशाली से कि आमरो जवर एक असो प्राणवान अतीत से, जेको पर आमी जेतरो गर्व करबीन, वोतरो कमीच से।

२. आमरो साहित्यिक पूरखाइन की विशेषता:-

जबं आमी अपला साहित्यिक अना सांस्कृतिक पूरखाइन की बात करं सेजन, तबं आमरो मस्तक गर्व लका ऊचो होय जासे।

राजा भर्तृहरि: आमी वोनं समाज का वंशज आजन ज्याहाँ राजा भर्तृहरि सरिखा महान योगी राजा भया, जिननं राजपाठ की विलासिता ला त्याग कर वैराग्य अपनाइन अना 'नीति शतक', 'श्रृंगार शतक', 'वैराग्य शतक' सरिखा कालजयी ग्रंथ की रचना करस्यानी संसार ला जीवन व्यापन को रस्ता देखाईन।

राजा भोज: आमी वोनं राजा भोज का वंशज आजन, जिनको नाव आवताच बुद्धि, न्याय अना साहित्य को शिखर याद आवं से। धार नगरी ला विद्या को धाम बनावने वाला, वाग्देवी की प्रतिमा स्थापित करने वाला राजा भोज स्वयं चौरासी श्रेष्ठ ग्रंथों का रचयिता होता। खगोल, व्याकरण, वास्तुकला सरिखा साहित्य लिखीन। उननं असा एकही विषय नोहता, जेला राजा भोज को लेखनीनं स्पर्श करी नही रहेस। 'कहाँ राजा भोज और, कहाँ गंगु तेली' सरिखी लोककथा अज भी उनको अजेय उच्चताला सिद्ध करं सेती।

क) आमरी पोवार समाज संस्कृति (गौरवमयी विरासत)

बहिन अना भाई हो, आमरी पोवार संस्कृति फक्त युद्ध अना शौर्य की संस्कृति नोहोय, तं या प्रकृति, मर्यादा अना उच्च मानवीय मूल्य की अद्भुत संस्कृति आय।

१. रीति-रिवाज अना सण-त्योहार:

आमरा रीति-रिवाज, आमरा बिह्या का संस्कार, आमरी सामाजिक व्यवस्था येतरी मजबूत अना अनुशासित से का, वा हर व्यक्ति ला मर्यादा मा बांधं से। आमरा त्योहार फक्त मनोरंजन का साधन नाहाती, वय प्रकृति

संगमा कृषि संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर, संस्कार का उत्सव आती। चाहे वू बईल को पोरा हो जेकोमा बेजुबान बैल को मेहनत को सम्मान, दसरा की मयरी हो जेकोमा भगवान राम नं रावन ला मारेव को बाद को भोजन की परंपरा, या दिवारी की खीर हो जेकोमा टुरूपोटूइनको अन्न संस्कार अना ईश्वर को प्रति कृतज्ञता को भाव छिपी से।

२. पारंपरिक पहनावा:

पोवार समाज को पारंपरिक पहनावा आमरो पूर्वजइन को शौर्य, मर्यादा अना सादगी को प्रतीक से। पयले पुरुष सिर पर शान लका मोठो फेटा बाँधत होता. आंग मा 'बाराकसी' कुर्ता अना पच्या पेहरत होता। कान मा कुंडल, डोस्की पर चुटी अना ओठ पर रौबदार मिशी उनको राजकीय आन-बान-शान की पयचान होती। वहाँ आमरी माय-बहिनी हिंदुस्तानी लुगड़ा मा शालीनता की प्रतिमूर्ति लगत होती। समय को साथ परिधान भले ही बदलेव, पर पूर्वजइन की वा गरिमा अज भी आमरो संस्कार मा जीवित से।

३. पोवारी पकवान

आमरो संस्कृति मा पकवान केवल भोजन च नहीं, बल्कि हर त्योहार की आत्मा रव्ह से। अखाड़ी मा भज्या बुड्या, कानुबा मा ठटरी-मटरी, पोरा मा करंजी पापड़ी, सराद मा पानबड़ा, दोड़का झुनकी की भाजी तथा होरी-तीजा मा सुकुड़ा, पुरण-रोटी, पांड का गुंजा, तीर संक्रात मा तीर का, मुर्रा का लाडू आमरो भानी की शोभा बढ़ावं से। दसरा के दिवस बनने वाली विशेष 'मयरी' आमरो ऐतिहासिक ताना बाना राजस्थान अना

बुंदेलखंड लका जोड़ से। येव पारंपरिक सवाद आमरो अनोखी पाक-कला अना समृद्ध पाहुणचार को जीवंत प्रमाण आय।

४. देवघर की चवरी

पोवार परिवार मा 'देवघर' आमरो मांगलिक काजकारण अना संस्कारइन को केंद्र रव्हं से। यहाँ माती लका तैयार चौकोनी/पंचकोनी पिंड स्वरूप 'चवरी' स्थापित रव्हं से, जेको सामने हर रोज आदरपूर्वक दिवो जरायेव जासे। मान्यता से कि येन पावन चवरी की माती पूरखाइननं मालवा लका इतनी आया तब संगमा आनी होतीन। भाव असो से की, येनं चवरी मा आमरो कुल का पूरखा निवास करं सेती। परिवार को बँटवारा को समय भी पूरखाइन को आशीर्वाद को रूप मा येनच चवरी की पवित्र माती नवो घरमा लिजा सेती, ज्या पीढ़िइन की अटूट कड़ि ला जोड़कर ठेवं से।

५. डोकरी पूजा

दिवारी को पावन अवसर पर आँगन मा गाय को शेण की बनायी जाने वाली 'डोकरी' की पूजा पोवार समाज की सबसे विशिष्ट परंपरा आय। या कोनी देवी-स्वरूपा पूरखा स्त्री की शक्ति अना मातृत्व को प्रति आमरी कृतज्ञता देखावं से। मध्य भारत मा येव विधान केवल पोवार समाजमाच दिसं से, जेव आमरो इतिहास ला राजस्थान की करणी माता (डोकरी माता) लका जोड़ से।

६. गायखुरी को चऊक

दिवारी को दिवस चाऊर को पीठ अना गेरू लका दरवाजा, सपरी, जातो, कांडी अना सीलबट्टा पर पारंपरिक 'गायखुरी' को चऊक उतरावन की रीत अत्यंत पावन से। येको पर दिवसबुड़ता चाऊर को पीठ का दिवो जरावं सेती। घर मा गाय रव्हनो शुभ मानने वाली या परंपरा आमरो प्राचीन संस्कृति की पयचान आय। गायखुरी अना डोकरी पूजा को बिना पोवार समाज की दिवारी अधूरी मानी जासे, ज्या प्रकृति अना पशुधन को प्रति सम्मान करनो सिखावं से।

ड) आमरो साहित्य: धरोहर अना संरक्षण की आवश्यकता

१. मौखिक साहित्य की अनमोल धरोहर:

आमरो पोवारी साहित्य लिखित मा कम, अना मौखिक रूप मा जीवित होतो। आमरा बिह्या का पारंपरिक अना मांगलिक गाना, आमरा नानीमाय, दादीमाय अना नानाजी, दादाजी द्वारा राती सांगत असी शौर्य अना नीति की कथा-कहानी, आमरा पोवारी हाना— ये सब आमरो समाज की वा अनमोल तिजोरी होती, ज्या पीढ़ी-दर-पीढ़ी आमला विरासत मा मिली होती।

२. संरक्षण की महती आवश्यकता (एक कड़वो सच):-

पर अज येनं मंच लका, येनं गौरवमयी स्थापना दिवस पर, मोला एक कड़वो सच भी तुमरो सामने ठेवनो पड़े। गयेव दुय-तीन दशक मा आमरो समाज शिक्षा, उद्योग, नौकरि अना आधुनिकता को क्षेत्र मा अभूतपूर्व प्रगति कर रही से। आमरो समाज गाँव लका निकलकर शहर मा बसन लगेव। या बहुत खुशी की बात से!

पर येनं प्रगति को मंगऽ एक बहुत मोठो नुकसान होय रही से। आमरो मा का काही लोग खुद ला आधुनिक समझकर आपली मातृभाषा ला, आपली 'पोवारी बोली' ला गावठी समझन लग्या। शहर मा रवने वाला आमरा भाई-बहीन आपलो टुरूपोटू संगमा पोवारी मा बात करन शरम महसूस करं सेती। परिणाम येव होय रही से कि आमरी या मीठी बोलीभाषा अज लुप्त होन को कगार पर आय गयी से। याद ठेवो, अगर बोली मर गई, तं लोकगीत मर जायेती, लोककथा मर जायेती अना आखरी मा आमरी संस्कृति को भी अंत होय जाये। येकोसाती येको संरक्षण अज सबदून मोठी जरूरत बन गयी से।

३. लिपिबद्ध साहित्य को निर्माण (आशा की किरण):

सन १९८६ मा पंवार क्षत्रिय महासभा को भोजपत्र मा अधिवक्ता पन्नालाल जी बिसेन इनका पोवार समाज को बारा मा, लेख प्रकाशित सेती पर हिंदी मा सेती. सन १९९० को आसपास सबदून पयले पोवारी मा लिखनेवाला स्व. मनराज जी पटेल, स्व. हिरालाल जी बिसेन, स्व.जैपाल जी पटले अना मी भी १९९० को मा पोवारी मा कविता करत होतो। वोको बाद १९९८ मा वाय. सी चौधरी सर की गीत गंगा आयी. वोको बाद डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे जी, एड. देवेंद्र चौधरी जी, एड. लखनसिंह जी कटरे, इतिहासकार ओ.सी.पटले सर अना आता कोरोना काल मा वाट्सएप गृप को माध्यम लका पोवारी मा लिखनेवाला दुय तीन दर्जन साहित्यकार तयार भया.

वोको मा विशेष नाव आयकर विभाग का अप्पर आयुक्त श्री ऋषि बिसेन जी, जिनला २०२० वरी पोवारी आवत ना्ेहती, पर वाट्सएप ग्रुप को माध्यम लका दुय सालमाच पोवारी सिकस्यान तीन च्यार पुस्तक पोवारी मा लिख डाकीन. इनकी “मध्य भारत मा पोवार समाज” अना इंजी. महेन पटले की “पोवार" नामक ग्रंथ हरेक पोवार समाज को व्यक्ति नं बाचे पाहिजे। येकोमा आमी कोन होता, कहाँ लका आया, आमरो इतिहास का से, संस्कृति कसी होती, आमरो समाज को खरो नाव का से, येको बारा मा जानकारी सबुत सहित मिल जाये।

अजवरी सपाई साहित्यकार इनकी १०० को जवरपास पोवारी मा, तसोच इतिहास, संस्कृति पर हिंदी मा पुस्तक लिखस्यान भयी सेती. पर येको प्रचार-प्रसार जेनं हिसाब लका भयेव पायजे वोनं हिसाब लका नही होय रही से. आता पुस्तक भी वोतरो प्रमाण मा प्रकाशित नही होय रही सेत.

पोवारी बोली, आमरो अस्तित्व अना अस्मिता की पयचान आय. या फक्त बोलचाल की भाषाच नही, तं आमरी परंपरा, संस्कृति, रीति रिवाज, अना जीवनदर्शन की चलती फिरती पुस्तक आय. पोवारी बोली का मूल संस्कार ‘क्षत्रिय पोवार (पंवार) वंश की सांस्कृतिक चेतना’ लका जुड़्या सेती.

४. महासंघ की भूमिका

येनं दिशा मा आमरो 'अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार महासंघ' की भूमिका सबदून महत्वपूर्ण से। पोवार समाज को सांस्कृतिक चेतनाला

पुनः जागृत करनसाती, साहित्य को माध्यम लका जनसामान्य वरी पोहचावन, भावी पीढ़ीला आपलो मातृभाषा को गौरव लका अवगत करावन अना नविन साहित्यकार इनला मंच देयस्यान प्रोत्साहित करन को उद्देश्य सामने ठेयस्यान हर सालं अ.भा.पोवार महासंघ को माध्यम लका आमरी लुप्तप्राय होने वाली बोली साती पोवारी साहित्य सम्मेलन का आयोजन करस्यान आमरो बोली को संरक्षण, संवर्धन अना सृजन को एक सशक्त कार्य सुरू से.

महासंघ फक्त सामाजिक आयोजन को मंच नोहोय, येव आमरो संस्कृति की रक्षा करने वालो जुनोच ३६ कुऱ्या पोवारइन को संघटन आय। अज येनं साव्वो स्थापना दिवस पर आमी सबला मिलकर एक संकल्प लेनो पड़े।

५. आमरो संकल्प:

आओ, आमी संकल्प लेबीन कि…

१) आमी आपलो घर मा, आपलो टुरूपोटूइन संगमा आपली पोवारी बोली मा बात करबीन।

२) आमी संकल्प लेबीन कि आमी आपलो समाज को साहित्यकार इनकी पुस्तक लेबीन, बाचबीन अना आपलो नवो पीढ़ी ला सौंपबीन।

३) आमी आधुनिक जरूर बनबीन, पर आपलो परंपरा ला कोनतोच कीमत पर बिसरनका नहीं!

भाषण को समापन

आखरी मा, मी आपलो वाणी ला विराम देत बस येतरोच कहूँन

सब मा से न्यारी, प्यारी प्यारी, बोलन नोको, शरमावो |

रीती आधारी, से आकारी, किरती येकी, पसरावो ||

मोरी पोवारी, से संस्कारी, हिंदी की या, उपभाषा |

बोलो पोवारी, सब मिलस्यारी, 'गोकुल' की से, अभिलाषा ||

एक घन पुनः सबला महासंघ को स्थापना दिवस की बहुत-बहुत शुभकामना देसु।!

जय गढ़कालिका! जय सियाराम!!

जय राजा भोज!!! जय पोवार समाज!

धन्यवाद!